क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग ध्यान पूर्ण यज्ञ (अग्निहोत्र)

''क्रियायोग ध्यान के द्वारा प्राण और अपान वायु के हवन से दिव्य योगाग्नि प्रकट होती है जिसमें अतीत के सम्पूर्ण कर्मबन्धन जो विकास में बाधक हैं, जलकर विनष्ट हो जाते हैं ।''– स्वामी श्री योगी सत्यम्

26 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । ''क्रियायोग की साधना उच्चतम एवं पूर्ण यज्ञ है जिसमें साधक शरीर में प्रवाहित होने वाली प्राण और अपान धाराओं का आपस में हवन करता है । इसी को श्रीमद्भगवदगीता में अग्निहोत्र कहा गया है । प्राण का अपान और अपान का प्राण में हवन (विलय) से प्राण और अपान की गति अवरुद्ध हो जाती है जिसे प्राण परायण (प्राण पर नियंत्रण) की अवस्था कहा गया है । ऐसी अवस्था में प्राण के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि यह दृश्य जगत प्राण का ही घनीभूत रूप है । क्रियायोग के अभ्यास में प्राण और अपान के घर्षण से दिव्य योगाग्नि प्रकट होती है । योग की दिव्य अग्नि में अतीत के सम्पूर्ण कर्मफल (कर्मबंधन) जो विकास में बाधक हैं और एक जन्म के बाद दूसरे जन्म को नियंत्रित करते रहते हैं, जलकर विनष्ट हो जाते हैं । ऐसी अवस्था में साधक पूर्ण निर्मल अवस्था की प्राप्ति कर लेता है जिसे मोक्ष (अज्ञानमुक्त अवस्था) कहते हैं ।'' उक्त विचार अन्तरार्ष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम महाराज जी ने महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग सत्संग शिविर में व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि योगाग्नि को महाभारत काल में धृष्टद्युम्न शक्ति कहा गया है । ''धृष्टद्युम्न'' शब्द में 'धृष्ट' का अभिप्राय घर्षण और 'द्युम्न' का अभिप्राय बल से है । क्रियायोग

की साधना से प्राण और अपान का आपस में घर्षण होता है अर्थात् दोनों के बीच दूरी घटती है । इस अवस्था में प्रकट होने वाली दिव्य आध्यात्मिक शक्ति ही धृष्टद्युम्न का स्वरूप है । इसी को देहज्योति भी कहते धृष्टद्युम्न शक्ति के जागृत होने पर सम्पूर्ण दैव शक्तियाँ प्रकाशित होने लगती हैं । जिस प्रकार धृष्टद्युम्न की व्यूह रचना में सम्पूर्ण पाण्डव शक्तियाँ सुरक्षित थीं उसी प्रकार अन्तःकरण में दिव्य योगग्नि के प्रकट होने पर सम्पूर्ण दैव शक्तियाँ पूर्ण प्रकाशित और सुरक्षित होने लगती हैं । इस अवस्था के प्रकट होने पर समय, दूरी, कठिनाई आदि समस्त मायावी अनुभुतियों का लोप हो जाता है । ऐसी अवस्था में साधक स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं के बीच दूरी की शून्यता का अनुभव कर लेता है । वह अपनी उपस्थिति ब्रह्माण्ड के प्रत्येक विन्दु पर अनुभव कर लेता है । इसी को सर्वव्यापकता की अनुभूति, परब्रह्म की अनुभूति, निर्विकल्प समाधि आदि अनेक रूपों में वर्णित किया गया है । श्रीमद्भगवदगीता में इसी अवस्था की प्राप्ति को विश्वरूपदर्शन के रूप में वर्णित किया गया है जिसमें साधक स्वरूप की सर्वव्यापकता और विराटता की अनुभूति कर लेता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि ब्रह्माण्ड के प्रत्येक विन्दु पर दृश्य व अदृश्य जगत की सम्पूर्ण रचनाएँ शाश्वत् चैतन्य शक्ति के रूप में उपस्थित हैं । किसी भी रचना का विनाश नहीं होता है । सभी रचनाएँ दश्य से अदश्य और अदृश्य से दृश्य रूप में रूपान्तरित होती रहती हैं । वे सारे लोग जो शरीर छोड़कर अदृश्य जगत में विलीन हो गये हैं आज भी अदृश्य रूप में विद्यमान हैं । क्रियायोग की साधना से सिर रीढ़ में स्थित सप्त ज्ञानकेन्द्रों के अलौकिक प्रकाश के जागृत होने पर साधक को अतीन्द्रिय दृष्टि प्राप्त हो जाती है जिससे वह दृश्य जगत के परे स्थित अलौकिक सूक्ष्म जगत की अनुभूति कर लेता है । इस अवस्था की प्राप्ति होने पर साधक किसी भी अशरीरी आत्मा, सूक्ष्म ऋषि मुनि की शाश्वत् उपस्थिति का अनुभव कर सकता है । क्रियायोग की साधना से अनुभवजन्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि किसी भी रचना का विनाश नहीं होता है । कोई भी मरता नहीं है । सम्पूर्ण रचनाएँ दृश्य से अदृश्य व अदृश्य से दृश्य में रूपान्तरित होती रहती हैं ।

क्रियायोग सत्संग शिविर के पण्डाल में भारत, कनॉडा, अमरीका, पोलैण्ड, ब्राजील, रूस, गयाना, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक, कल्पवासी, तीर्थयात्री भाग ले रहे हैं। क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

— योगमाता